ISSN : 0435-1460
UGC Care List No. 25

के.हि.सं. गवेषणा

अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, भाषाशिक्षण तथा साहित्य चिंतन की त्रैमासिक शोध - पत्रिका

अंक-132 : चैत्र-ज्येष्ठ, 2079/अप्रैल-जून, 2023

हिंदी भाषा
हिंदी साहित्य
हिंदी भाषा विज्ञान
हिंदी भाषा शिक्षण
हिंदी शोध संदर्भ
हिंदी भाषा अनुशीलन
हिंदी साहित्य चिंतन
भाषिक विश्लेषण
भाषिक अनुप्रयोग
साहित्यिक विवेचना
प्रयोजनमूलक हिंदी
हिंदी भाषा शैली
प्रयुक्तिपरक हिंदी
हिंदी भाषा संरचना
हिंदी व्याकरण
हिंदी भाषा व्यवहार
समाज भाषा हिंदी
मीमांसा टीका
भाषिक विमर्श
भाषिक समीक्षा

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

अनुक्रम

आमुख/ **प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी**		5-6
संपादकीय/ **डॉ. सपना गुप्ता**		7-9
हिंदी एवं मैतैलोन की वाक्य संरचना का आधारभूत तत्व 'अन्वय': एक व्यतिरेकी अध्ययन	**ह. सुवदनी देवी**	10-23
हिंदी और असमिया भाषा की लिंग-व्यवस्था: एक तुलनात्मक अध्ययन	**कल्पना पाठक**	24-34
पवारी व्युत्पादक रूपिमिक विश्लेषक	**तुफान सिंह पारधी/हर्षलता पेटकर**	35-44
प्राकृतिक भाषा संसाधन में लैंगिक पूर्वाग्रह: हिंदी भाषा के संदर्भ में	**मधुप्रिया/ सत्येन्द्र अवस्थी**	45-52
भाषा शिक्षण में तकनीकी संसाधनों (आईसीटी) के अनुप्रयोग	**चंद्रकांत तिवारी**	53-76
अभिमन्यु अनत का उपन्यास: जम गया सूरज	**खेमसिंह डहेरिया**	77-84
रामविलास शर्मा का भाषा चिंतन (संदर्भ: हिंदी-उर्दू विवाद)	**विवेक कुमार तिवारी**	85-91
हिंदी नवगीत परंपरा के सामाजिक सरोकार	**चंद्रकांत सिंह**	92-103
लोक संस्कृति एवं शैक्षिक निहितार्थ: मुसहर समुदाय के विशेष संदर्भ में	**अवनीश कुमार**	104-111
चन्द्रकुँवर बर्त्वाल का अंतर्मन और सौंदर्यबोध	**कपिल देव पंवार**	112-119
भारतीय ज्ञान परंपरा: महाभारत से 'अभिशापित द्विधाग्रस्त: द्वापर' तक	**कृष्ण कुमार यादव 'कनक'**	120-133
महादेवी वर्मा के काव्य में संगीत	**प्रियंका**	134-142
समतुल्यता / सममूल्यता सिद्धांत	**श्रीराम हनुमंत वैद्य**	143-151
जायसी की साहित्यिक अवधारणा	**अनुप कुमार पाण्डेय**	152-159
समकालीन हिंदी कविता: संवेदना एवं प्रवृत्तियाँ	**आलोक सिंह**	160-169
वैश्विक साहित्यकार निर्मल वर्मा का साहित्य और जीवन के मध्य अंतरंग संबंध 'यहाँ और इसके बाद' (पुस्तक समीक्षा)	**आर.पी. शुक्ला**	170-178
बानी को सार किसोर किसोरी: डॉ. सतीश चतुर्वेदी 'शाकुंतल' (पुस्तक समीक्षा)	**दीप्ति गुप्ता**	179-182

इस अंक के लेखक

सदस्यता फार्म

लेखकों के निवेदन

हिंदी नवगीत परंपरा के सामाजिक सरोकार

—चंद्रकांत सिंह

सार

मनुष्यता के विकास के साथ गीतों का भी विकास हुआ है। आह्लाद के क्षणों में मनुष्य अपनी प्रसन्नता को गीतों के माध्यम से व्यक्त करता आया है। प्रस्तुत आलेख में आधुनिक गीत विधा के क्षेत्र में निराला के योगदान को चिह्नित करते हुए नवगीत परंपरा को समझने का यत्न हुआ है। निराला की समाजिक प्रतिबद्धता एवं जीवटता का प्रभाव नवगीत-परंपरा के कवियों पर पड़ा। शोध आलेख में नवगीत परंपरा के प्रतिनिधि रचनाकारों उद्भ्रांत, देवेन्द्र कुमार, माहेश्वर तिवारी, शिव बहादुर सिंह भदौरिया, रमेश रंजक, श्रीकृष्ण तिवारी, धर्मवीर भारती, बुद्धिनाथ मिश्र आदि के गीतों के बहाने समूची नवगीत परंपरा को समझने का प्रयास किया गया है। हिंदी के नवगीतकार अपने गीतों में सामाजिक भावनाओं को पूरी तल्लीनता के साथ व्यक्त करते हैं। लोक का घना रूप प्रायः उनके गीतों में देखते ही बनता है। गाँव से शहर जाने पर खोती हुई और सिमटती हुई जनचेतना भी यहाँ है। यही नहीं स्वतंत्रता के बाद की समस्याओं विशेषकर बेरोजगारी, अभाव, शोषण एवं मूल्यहीनता को भी कवियों ने गीतों में दर्शाया है। प्रस्तुत शोध-आलेख में न केवल कवियों की रचनाशीलता एवं सृजनात्मक दायित्व को उभारने का प्रयास किया गया है, प्रत्युत उनकी सामाजिक चिंता को भी सूक्ष्मता के साथ देखने का प्रयास किया गया है। छायावाद के बाद हिंदी कविता से कोमल एवं भाव-प्रवण गीत गायब होने लगे। यही नहीं हिंदी कविता के धुर विरोधी रूप में गीत विधा को समझा जाने लगा। नवगीतकारों की विशेषता इस बात में है कि वे अपने भावों को पूरी तन्मयता एवं प्रतिबद्धता के साथ रखते हैं। प्रस्तुत शोध-आलेख नवगीत परंपरा की मूल प्रवृत्तियों को तो उद्घाटित करता ही है, साथ ही उसकी यथार्थपरक अभिव्यक्ति को भी समग्रता के साथ देखता है।

बीज-शब्द-प्रकृति, लोक, सौंदर्य, भूख, मूल्य, मोह-भंग, शहरी करण